7 'मूर्च्छना'। इस प्रकार मूर्च्छना

(5) 'मूर्च्छना' के चार प्रकार बताए गए हैं—

(i) सम्पूर्ण मूर्च्छना, जिसे परवर्ती विद्वानों ने 'शुद्ध' 'मूर्च्छना' कहा है।

(ii) षाडव 'मूर्च्छना'

(iii) औडव 'मूर्च्छना'

(iv) साधारणीकृत मूर्च्छना

षाडव और औडव 'मूर्च्छना' 'तान'' कहलाई। परवर्ती विद्वानों ने 'मूर्च्छना' के चार भेद नि

बताए—

(1) शुद्धा या सम्पूर्ण 'मूर्च्छना', (2) अन्तर गन्धार संहिता, अर्थात् जिस 'मूर्च्छना' में अ
का प्रयोग किया जाय वह अन्तर गन्धार 'मूर्च्छना' है। (3) जिस 'मूर्च्छना' में काकली निषाद
किया जाय वह काकली निषाद युक्त 'मूर्च्छना' थी। (4) जिस 'मूर्च्छना' में अन्तर गन्धार औ
निषाद, दोनों का प्रयोग किया जाए वह अन्तर काकली संहिता या साधरणीकृत 'मूर्च्छना'
मूर्च्छना की सर्वाधिक विशेषता थी, ग्राम के प्रत्येक स्वर को आरम्भिक स्वर मानते हुए नवीन
को प्राप्त करना था। इससे विकृत स्वरों के अनेक स्वर-समूह प्राप्त हो जाते थे। अलग से विकृ
कल्पना नहीं करनी पड़ती थी। पाश्चात्य संगीत में इसी को shift of key note या षडज-
जाता है।

मूर्च्छना' और आधुनिक थाट

(1) जिस प्रकार आधुनिक मेल या थाट-राग-पद्धति में रागों की उत्पत्ति मेल या थाट से
उसी प्रकार प्राचीन गान्धर्व (संगीत) में जातिगायन की उत्पत्ति का आधार 'मूर्च्छनाएँ थीं।

(2) 'मूर्च्छना' का स्वरूप था, सात स्वरों का क्रमानुसार प्रयोग, उसी प्रकार आज
ऐसी व्यवस्था, जिसमें स्वरों का क्रम से प्रयोग किया गया हो, थाट या मेल कहलाता है।
है, कि जहाँ 'मूर्च्छना' में आरोह अवरोह दोनों किया जाता था, वहीं थाट में केवल
श्यकता रहती है।

(3) 'मूर्च्छना' पद्धति में केवल दो स्वर विकृत माने गए क्योंकि षडजग्राम और म
ामों के स्वरों को आधार मानते हुए आरोह-अवरोह किए जाने पर अनेक विकृत स्वरों की
ाप्त हो जाती थीं। जबकि आधुनिक थाट-राग पद्धति में क्रमानुसार सात स्वरों के स
ाते हैं। इसलिए अलग-अलग विकृत स्वरों के प्रयोग थाटों में मिलते हैं, जैसे कल्याण
रव थाट आदि।

(4) 'मूर्च्छना' जातिगायन पद्धति में 7 षडजग्रामिक और 7 मध्यम ग्रामिक अर्थात् 1
थे। जबकि आज एक सप्तक के शुद्ध और विकृत 12 स्वरों से गाणित के द्वारा
ाई गई। जिनमें 19 थाट दक्षिण संगीत में और 10 थाट उत्तरी संगीत में प्रचलित
मस्त प्रचलित रागों को माना गया।

गीतिक और व्यवहारिक दृष्टि से ग्राम-मूर्च्छना का प्रयोग आधुनिक थाट-राग प
ृत और महीन है, क्योंकि सप्तक के प्रत्येक स्वर को आधार मानकर गायन-वादन
स्था को दर्शाता है। इस दृष्टि से थाट-राग पद्धति सीमित है। वैसे आधुनिक थाटों